B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

B.A-I (Gen & Hons)
Deptt. of Sociology

Date:- 16/09/2
By: Dr. Rajesh K.
Sociology

विषय - सामाजिक नियंत्रण का महत्व

सभी समाजों एवं व्यक्तियों की भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ होती हैं ऐसे में अगर समाज एवं व्यक्ति पर नियंत्रण न हो तो समाज असंतुलन की स्थिति में हो जा सकता है। व्यक्ति एवं समाज के इन्ही विपरीत व्यवहारों को देखते हुए समाज को सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता महसूस हुई। सामाजिक नियंत्रण के महत्व को निम्नलिखित कार्यों के आधार पर समझा जा सक है:-

- **सुरक्षा की स्थापना** - यदि व्यक्ति एवं समाज पर कोई नियंत्रण नहीं होगा तो वह अपनी शक्ति के आधार हमेशा दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप करेगा। इस अराज एवं अव्यवस्था को नियंत्रित करने हेतु इसकी आवश्यकता
- **एकता की स्थापना**: नियंत्रण व्यक्ति को अनुशासित करता है, जिसके फलस्वरूप समाज में एकता का निर्माण हो
- **परम्पराओं की रक्षा**: सामाजिक नियंत्रण परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में मदद करती है, कुछ परम्पराएँ आज भी मानव जाति के कल्याण हेतु उपयोगी है।
- **विचारों और कार्यों में संतुलन स्थापित करना**: जिस सम के ~~व्यक्ति एवं विचारों के~~ विचारों एवं कार्यों में समानता एवं संतुलन नहीं होता है वह समाज धीरे-धीरे विनाश की ओर अग्रसर होता है। नियंत्रण विचार और कार्यों के बीच संतुलन स्थापित करता है।
- **पारस्परिक सहयोग में वृद्धि**: नियंत्रण का मुख्य कार्य पारस्परिक सहयोग को पैदा करना है। पारस्परिकता किसी-कार्य को करने से रोकता है। यह सहयोग एवं उद्देश्य को पूरा करने की भावना पैदा करता है।
- **सामाजिक संगठन में स्थिरता**: नियंत्रण व्यवस्था की दिशा में होने वाले परिवर्तनों पर रोक आरोपित करता है तथा सामाजिक संगठनों में स्थिरता का गुण पैदा करता है; नियंत्रण के कारण व्यक्ति मनमाने ढंग से कार्य नहीं कर पाता है। जैसे:- परिवार, विवाह एवं नातेदारी, अनेकों परिव के बावजूद यह संस्था आज भी अस्तित्व में है जबकि इन संस्थाओं में अनेकों विपरीत परिवर्तन आलोचना के आगम संभव है।